Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण

Harish Chandra

Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya, India

---------------------------♦-----------------------------

4.1 गांधी जी का मध्यप्रदेश आगमन –

गांधी जी के भारतीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने तथा उनके द्वारा भारतीय जनता को नये कार्यक्रम देने से भारतीय राजनीति में एक नये युग का प्रारंभ हुआ। 1919 में रोलेट एक्ट के विरूद्व उन्होने ब्रिटिश सरकार के विरूद्व सत्याग्रह की घोषणा की थी और यही वह समय था जब देश का नेतृत्व तिलक के हाथों से गांधी जी के हाथों में आ गया।

मध्यप्रदेश की राजनीति में 1920 का वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। इस वर्ष कलकत्ता में सितम्बर में क्रांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ और फिर दिसम्बर में नागपुर में नियमित अधिवेशन। वर्षान्त में नागपुर मे हुआ अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ। उस समय तक गांधी जी के राजनीतिक विचार लोगों को तेजी से आकर्षित कर रहे थे। अपनी यात्राओं, भाषणों, लेखों, और फैसलों से उन्होंने सम्पूर्ण भारत की चेतना को झकझोर दिया था। नागपुर अधिवेशन के लिए गांधी जी ने कलकत्ता से रेल ,द्वारा अपनी यात्रा प्रारंभ की तथा उनका प्रथम पड़ाव मध्यप्रदेश के प्रमुख नगर रायपुर में हुआ म्ध्यप्रदेश वासियों ने पलक पांवड़े बिछाकार निष्ठा और उमंग के साथ उनकी आगवानी की उनकी मध्यप्रदेश में प्रथम यात्रा इस क्षेत्र के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना थी और इस यात्रा को व्यावहारिक रूप देने का श्रेय जाता है पं. सुन्दरलाल शर्मा को। महात्मा गांधी को रायपुर लाने के लिए अनेक बार पं. सुन्दरलाल शर्मा ने यात्राएँ की तथा लाहौर, काशी, पटना, तथा कलकत्ता, जाकर उन्होने गांधी जी से भेंट की। गांधी जी जब 20 दिसंबर को रायपुर आए उनके साथ मौलानाशैकत अली भी थे। उस समय पं. सुन्दरलाल शर्मा के नेतृत्व में धमतरी के निकट कंडेल ग्राम में नहर सत्याग्रह चल रहा था तथा मध्यप्रदेश में हरिजन उद्धार का कार्य भी किया जा रहा था। इन सबसे प्रभावित हो कर गांधी जी ने कहा था – '' मैने सुना था कि मध्यप्रदेश पिछड़ा हुआ है। पर यहां आने पर पता चला कि यह गलत है। यहां तो मुझसे भी अधिक विचारवान और दूरदर्शी लोग रहते हैं। उदाहरण के लिए पं. सुन्दरलाल शर्मा को ही लीजिए जो मेरे साथ बैठे हैं। उन्होने तो मुझसे पहले ही हरिजन उद्धार का कार्य शुरू कर दिया था इस नाते वे मेरे गुरू हैं।''

महात्मा गांधी ने रायपुर में अपना प्रथम भाषण उस ऐतिहासिक स्थान पर दिया जिसे आाज गांधी चौक कहा जाता है। इस चौक में न जाने कितने महान नेताओं ने अपने ओजस्वी भाषणों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम का शंखनाद किया तथा जन–जागरण और जनआन्दोलन का दिव्य मंत्र फूंका है। यह वही चौक है जहाँ अंग्रेजी शासन का पाशविक दमन चक्र निरन्तर चलता रहा तथा लाठियों से जनता पर अनेक प्रहार हुए। गांधी जी के नेतृत्व में चलने वाले दो दशक से भी अधिक के राष्ट्रीय संग्राम का संचालन इसी स्थान से हुआ। इस स्थान पर गांधी जी का भाषण सुनने के लिए हजारों की भीड़ एकत्रित हुई थी। गांधी जी ने अपने भाषण में असहयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि यदि प्रत्येक भारतवासी स्वतंत्रता के लिए सर्वत्र न्यौछावर करने को तैयार रहे तो स्वराज्य का लक्ष्य बहुत दूर नही रह सकता।

गांधी जी पं. रविशंकर शुक्ल के बूढ़ापारा स्थित निवास पर ठहरे थे। रायपुर की सभा में भाग लेने के बाद वे धमतरी और कुरूद के लिए मोटर कार द्वारा रवाना हुए। रायपुर धमतरी मार्ग में स्थान–स्थान पर उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। महात्मा गांधी की जय और भारत माता की जय के नारे से वातावरण गूंज उठा। उनके व्यक्तित्व के प्रकाश से जनमानस, आलोकित हो उठा पूरे मध्यप्रदेश में राष्ट्रीयता, देशसेवा, तथा बलिदान का उत्साहपूर्ण वातावरण निर्मित हो गया।

धमतरी पहुॅचने पर मकई चौक पर गांधी जी का बड़े उत्साह से स्वागत हुआ। कण्डेल सत्याग्रह अब तक समाप्त हो चुका था और धमतरी की जनता विजयी सत्याग्रही के समान सत्याग्रह आन्दोलन के जन्मदाता का स्वागत कर रही थी। उनके भाषण का प्रबंध जामू हुसैन के बाड़े में किया गया था। सभा स्थल के प्रवेश द्वार पर भीड़ इतनी अधिक थी कि गांधी जी का उसमें प्रवेश करना ही कठिन था। सभा स्थल तक ले जाने के लिये तब गुरूर के उमर सेठ नामक एक कच्छी व्यापारी ने उन्हें कन्धे पर बिठाया और मंच तक ले गया। जो मंच गांधी जी के बैठने के लिए बनाया गया था वह अति सुन्दर तोरण पताकाओं तथा नेताओं के चित्रों से सुसज्जित था। सर्वप्रथम बाजीराव कृदत्त ने नगर तथा ग्रामवासियों की ओर से गांधी जी को 501 रूपये की थैली भेंट की। लगभग 15 हजार लोगों की उपस्थिति में गांधी जी और मौलाना शौकत अली के भाषण हुए। कार्यक्रम में गांधी जी ने जनता को लगभग एक घंटे तक अपने भाषण से सम्मोहित किये रखा। उन्होने अपने भषण में जनता की सराहना की एवं तहसील एवं आसपास के गॉवों के लोगों को उनके सत्याग्रह कण्डेल ग्राम सत्याग्रह की सफलता पर बधाई देते हुए भविष्य के आन्दोलनों हेतु प्रेरणा दी। लगभग एक बजे तक यह कार्यक्रम चला। इस मौक पर गांधी जी के साथ बाजीराव कृदत्त, दाऊ डोमार सिंह नंदवंशी, सेठ हंसराज तेजपाल, किशनगीर गोसाई, मोहम्मद अब्दूल करीम, दाऊ छोटेलाल, अब्दुल हकीम वकील, सेठ उस्मान अब्बा, भानजी भाई ठेकेदार एवं बदरूद्दीन मालगुजार आदि सक्रिय कार्यकर्ता उपस्थित थे।

गांधी जी के भाषण का जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उसके बाद अनेक लोगों ने वकालत छोड़ दी और अनेक लोगों ने आजीवन खादी पहनने का निश्चय किया। धमतरी से गांधी जी कण्डेल ग्राम गये। इस अवसर पर वे कुरूद गांव भी गये और जहां उनका उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया। धमतरी में गांधी जी की ठहरने की व्यवस्था श्री नारायणराव मेघावाले के निवास स्थान

पर की गई थीजहां उन्होने रात्रि विश्राम किया। प्रातःकाल वे पुनः रायपुर के लिए रवाना हो गये। धमतरी से उनकी कार चलाने का सौभाग्य मिला युवा हजारी लाल जैन को। धमतरी से लौटने के बाद गांधी जी ने रायपुर में ब्राम्हणपारा की आनंद सामाज लाइब्रेरी के प्रांगण में महिलाओं की एक सभा को सम्बोधित किया। इस सभा में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। उन्होने यहां महिलाओं से तिलक स्वराज्य कोष दान देने की अपील की। इसका बहुत प्रभाव पड़ा और उपस्थित महिलाओं के पास जो कुछ था उसे उनके चरणों में अर्पित करने की होड़ लग गई। अनुमानतः दो हजार रूपये मूल्य के सोने–चाँदी के गहने और रूपये एकत्रित हो गये। गांधी जी द्वारा रायपुर में ली गई महिलाओं की सभा मध्यप्रदेश में महिला उत्थान की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके प्रभाव से न केवल महिलाओं ने अपने आभूषण और पैसे उन्हे अर्पित किये, अपितु उनसे राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रेरणा भी ग्रहण की। जो महिलाएं उस समय गांधी जी की सभा में उपस्थित थी, उन्होने उनके स्वराज के संदेश को मध्यप्रदेश के कोने कोने में स्थित महिलाओं तक पहुंचाने का अभूतपूर्व कार्य किया। गांधी जी के जादुई व्यक्तित्व का महिलाओं पर जो प्रभाव पड़ा वह समूचे स्वाधीनता आन्दोलन में उन्हे उत्साहित करता रहा।

मध्यप्रदेश के निवासियों पर गांधी जी के व्यक्तिव का जो प्रभाव पड़ा उसकी एक झलक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रभुलाल काबरा के शब्दों में इस प्रकार है– "मैने गांधी जी को रायपुर के प्लेटफार्म पर देखा। उसी डाक गाड़ी से लोकमान्य तिलक, दादा साहेब खापर्डे, डॉ. मुंजे आदि कलकत्ता से आ रहे थे। प्लेटफार्म पर ये सभी नेता प्रथम श्रेणी या द्वितीय श्रेणी में थे किन्तु उनमें अकेले गांधी जी ही नही दिख रहे थे। जनसमूह की ऑखे गांधी जी को ढूंढ रही थी। किसी ने बताया कि वे तृतीय श्रेणी के डिब्बे मे बैठे है। जनता उसी तरफ दौड़ पड़ी और लोगों ने देखा कि लुंगी और पट्टीवाला कुरता पहने गांधी जी दोनो हाथ जोड़े हुए तुतीय श्रेणी के डिब्बे के दरवाजे पर खड़े है। जनता के मुँह पर एक ही बात थी देखो गांधी जी तृतीय श्रेणी में आ रहे है। उनकी सादगी को देखकर अनेक लोग भावुकता में रो पड़े। लोगों को यह विश्वास हो गया कि गरीब और दलित भारतीय जनता का सही नेतृत्व गांधी जी ही कर सकते है।

गांधी जी की मध्यप्रदेश की प्रथम यात्रा का यह परिणाम हुआ कि लोगों ने बड़े उत्साह से उनके नेतृत्व में चल रहे असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। उनकी प्रेरणा से अनेक महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई तथा चरखा कातना प्रारंभ किया। यह प्रथम अवसर था जब मध्यप्रदेश की महिलाओं में राजनीतिक जागृति आई। उनकी प्रेरणा से मध्यप्रदेश के अनेक नेताओं ने महिला उत्थान की दिशा में उल्लेखनीय योगदन दिया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन की समाप्ति के बाद गांधी जी ने 1933 में हरिजन उद्धार का कार्य प्रारंभ किया तथा इस उद्देश्य से संपूर्ण देश की यात्रा की थी। मध्यप्रान्त में गांधी जी के दौरे की व्यवस्था का सूत्र मुख्यतः पं. रवि शंकर शुक्ल तथा व्यौहार राजेन्द्र सिंह के हाथों में था। जहां गांधी जी गये वहां लोगों ने तन–मन–धन से उनका स्वागत किया। मध्यप्रदेश में उनका प्रथम आगमन दुर्ग में 22 नवंबर 1933 को करीब 3 बजे हुआ। उस दिन आकाश मेघाछन्न था तथा कुछ–कुछ पानी बरसने लगा था। इसके बावजूद थी दर्शनाभिलाषी जन–समूह दूर–दूर के गांवों से बरसते पानी और कड़कते ठण्ड की परवाह न कर बरसाती नदी के समान उमड़ आ रहा था। बुजुर्गों का कहना था कि दुर्ग में इतना बड़ा जन समूह पहले कभी भी एकत्र नहीं देखा गया। गांधी जी के आगमन के पश्चात् शनैः शनैः वर्षा कम होने लगी तथा सभा स्थल में पधारने के समय तक वह बिलकुल बंद हो गई। दुर्ग में आने के पश्चात उन्होंने सर्वप्रथम बैंथर्स हिन्दी स्कूल जाकर हरिजन विद्यार्थियों से भेंट की। आर्य कन्या विद्यालय तथा हरिजन महिलाओं का सूत कातना देखा। फिर दाऊ घनश्याम सिंह जी गुप्त के मकान में कुछ क्षण विश्राम करके सभा स्थल के लिये रवाना हुए। मार्ग में हरिजन कालोनी में उनका स्वागत किया गया तथा थैली भेट की गई। सभा स्थल में ऐसी जबरदस्त भीड़ थी कि शान्त रहने पर भी दूसरे छोर तक किसी को भी आवाज स्पष्ट सुनाई नहीं दे सकती थी।

इस सभा में गांधीजी ने हरिजन उत्थान के संबंध में भाषण दिया। उन्हें एक थैली अर्पण की गई और दान की वस्तुओं को नीलाम किया गया कुल रकम करीब 2600 के यहां एकत्रित हुई। 10 मंच पर गांधी जी के लिये जो कुर्सी रखी गई थी वह कुछ इस प्रकार की थी कि चक्की की तरह उसे चारों ओर घुमाया जा सके। गांधी जी को जब इस कुर्सी पर बिठा कर चारों ओर घुमाया गया तो उन्होंने पूर्ण कौतूक से आयोजकों की इस सूझबूझ का आनन्द लिया और उपस्थित विशाल जन समूह को उन्हें सुनने का नहीं तो देखने का सन्तोष अवश्य प्राप्त हुआ। गांधी जी ने अपने भाषण में कहा कि अभी तक हमने हरिजनों के साथ बहुत अन्याय किया है। अब उन्हें सवर्णों के समान ही सुविधाएं और अधिकार प्राप्त होना चाहिए। हमारा सबसे प्रमुख कर्तव्य है कि छूआछूत के इस कलंक को हम अपने माथे से मिटा दें। हरिजनों के कुंओं से पानी लेने और मंदिर प्रवेश पर कोई निषेध नहीं होना चाहिए। दुर्ग में गांधी जी के कार्यक्रम में घनश्यामसिंह गुप्त, रत्नाकर झा तथा मोहनलाल बाकलीवाल आदि अनेक कार्यकर्ताओं ने सहयोग दिया।

उसी दिन गांधी जी शाम लगभग छः बजे रायपुर पहुंचे। रास्ते में कुम्हारी से ही भीड़ और स्वागत भेंट आरंभ हो गई थी। रायपुर के आमापारा में मिशनरियों की ओर से स्वागत किया गया। आमापारा स्कूल में ही नगर की ओर से अपार हर्ष के साथ रायपुर की जनता ने उनका स्वागत किया। आमापारा से बूढ़ापारा तक पहुंचने में गांधी जी को तीन घंटे से ज्यादा समय लगा।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गांधी जी पांच दिन तक अर्थात् 28 नवम्बर, 1933 तक रायपुर में रूके। सुबह रायपुर से रवाना होकर दिन में तीन चार स्थानों को जाते और रात्रि में पुनः रायपुर आकर विश्राम करते। उन दिनों बूढ़ापारा स्थित पं. रविशंकर शुक्ल का मकान जनता के लिए तीर्थ स्थान सा बन गया था और वहां लगभग हर समय हजारों आदमियों की भीड़ लगी रहती थी।

रायपुर निवास के दौरान गांधी जी की सनातनी समाज के लोगों से बातचीत हुई। उन्होंने पूछा कि आप अछूतों को ही हरिजन क्यों कहते हैं? क्या हम लोग हरिजन नहीं है? गांधी जी ने उत्तर दिया कि जिसे दुनिया दुतकार देती है उसे हरि अपना लेता है, अतः वे हरिजन हो जाते हैं। अपने आचरण के कारण नहीं, बल्कि लोक व्यवहार तथा हरि की उदारता की दृष्टि से वे हरिजन हैं। जब उनकी दशा ठीक हो जायेगी तब हरिजन शब्द अपने आप निकल जायेगा।

रायपुर स्थित पं. माधवराव सप्रे स्कूल में 25 नवंबर को नगर की सभी संस्थाओं की ओर से चांदी की डिब्बी में दिये गये मानपत्र को गांधी जी ने वहीं नीलाम कर दिया। इसके पश्चात् मौदहापारा रायपुर की हरिजन बस्ती में उनका भाषण हुआ। इस अवसर पर नयापारा रायपुर में कन्हैयालाल वर्मा के निवास

पर महिलाओं की एक सभा हुई। गांधी जी के आव्हान पर महिलाएं वहां बड़ी संख्या में उपस्थित हुई। उनकी अपील पर बहुत सा धन और आभूषण हरिजन फंड के लिए दिया गया। एक महिला श्रीमती जेठा बाई द्वारा दी गई सोने की अंगूठी को उन्होंने गांधी चौक में नीलाम भी किया। गांधी जी को केवल रायपुर से हरिजन कोष के लिए 14,500 रूपये प्राप्त हुए।

रायपुर में महिलाओं की सभा को गांधीजी का संबोधन तथा महिलाओं द्वारा हरिजन फंड में दान दिया जाना महिला उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। उनके हरिजनोद्धार संबंधी विचारों का महिलाओं पर काफी प्रभाव पड़ा तथा उनमें छुआछूत के प्रति जो अंधविश्वास था वह कुछ हद तक दूर हो गया। इतना ही नहीं महिलाओं में समाज सुधार की भावना का संचार हुआ और भविष्य में मध्यप्रदेश की महिलाआं ने जातपात के बंधनों को तोड़कर स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया।

महात्मा गांधी ने 27 नवम्बर को प्रातः आठ बजे रायपुर से मोटर कार द्वारा धमतरी के लिए प्रस्थान किया। उनके आगमन की सूचना पूर्व से ही प्रसारित होने के कारण उनके दर्शन करने तथा उपदेश सुनने के लिये असंख्य नर–नारियों का एक विशाल समूह धमतरी के प्रवेश द्वार मकईबंध नामक चौक पर उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। यहां कांग्रेस कमेटी की ओर से नारायण राव मेधावाले तथा नगरपालिका आदि विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख जनों ने पुष्प माला पहनाकर उनका हार्दिक स्वागत किया। यहां से एक खुली कार में बैठकर नगर के प्रमुख मार्गों से होकर पूर्व निश्चित कार्यक्रमानुसार दाजी कन्या मराठी पाठशाला में भाषण करने गये। इसके पश्चात छोटेलाल श्रीवास्तव के मकान के सामने वाले चौक में महिलाओं की एक विशाल सभा में भाषण करने पहुंचे। यहां उनके शिक्षाप्रद सामयिक भाषण से प्रभावित होकर सभा में उपस्थित महिलाओं में से अनेकों ने अपने शरीर से सोने तथा चांदी के आभूषणों को निकालकर हरिजनोद्धार कार्यक्रम के लिये सहर्ष गांधी जी को समर्पित किया। इस प्रकार धमतरी की महिलाओं ने पुरूषों के साथ महात्मा गांधी तथा देश के कार्य में पूर्ण सहयोग देने की भावना को प्रत्यक्ष प्रमाणित कर देश के प्रति अपनी अनुपम श्रद्धा प्रकट करने में कोई त्रुटि नहीं की। गांधी जी ने अपने भाषण में धमतरी नगर को स्वराज्य प्राप्त करने विषय आन्दोलनों में सदा सक्रिय भाग लेने के कारण भारत का दूसरा बारदोली कहकर सम्बोधित किया। यहां से गांधी जी लौट कर रायपुर वापस आ गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल रायपुर से निकलकर गांधी जी बिलासपुर के लिये रवाना हुए। रास्ते में राजिम, भाटापारा, बलौदा, मुंगेली तथा लगभग सभी गांवों में अपार भीड़ गांधी जी के दर्शनार्थ एकत्रित थी। एक स्थान पर सड़क के किनारे लगभग 80–85 साल की एक वृद्धा मोटरकार के सामने आकर खड़ी हो गई और रोने लगी। उसके हाथ में फूलों का एक हार था। उसे देखकर गांधी जी ने कार रूकवाई जब उससे पूछा गया तो उस वृद्धा ने बताया वह हरिजन थी और मरने के पहले एक बार गांधी जी के चरण धोकर फूल चढ़ाना चाहती थी। गांधी जी ने हंसकर कहा कि इसके लिये वह एक रूपया लेंगे। बेचारी निर्धन महिला रूपया कहां से लाती? आस–पास के लोगों ने रूपया देना चाहा लेकिन नहीं लिया। तब उस वृद्धा ने कहा कि मैं घर जाकर लाती हूं, शायद निकल आये। गांधीजी के पास इतना समय कहां? जब वह वृद्धा कुछ निराश सी हो गई तो गांधी जी ने हंसकर अपने पांव बढ़ा दिये। वृद्धा को तो जैसे अमूल्य निधि प्राप्त हो गई। अंसुवन जल से अपने महान हरिजन उद्वारक के पांव पखारे, श्रद्धा सुमन अर्पित किये तब गांधी जी आगे बढ़े।

बिलासपुर में दोपहर को नगर पालिका उद्यान में महिलाओं की एक विशाल सभा हुई जिसमें महिलाओं की ओर से लगभग एक हजार रूपयों की थैली गांधी जी को भेंट की गई। लेकिन गांधी जी इस थैली से सन्तुष्ट नहीं थे। इसलिये श्रीमती अग्निहोत्री ने उपस्थित महिलाओं में और भी थैलियां वितरित की। गांधी जी ने श्रीमती अग्निहोत्री से कहा कि वे स्वयं आंचल फैलाकर धन एकत्रित करें। उन्होंने ऐसा ही किया और गांधी जी को और भी धनराशि प्राप्त हुई। इसके पश्चात् शनिचरा पड़ाव में गांधी जी ने एक विशाल आमसभा को सम्बोधित किया। बिलासपुर के इतिहास में इतनी बड़ी सभा पहली बार हुई थी। इस सभा में बिलासपुर की ओर से गांधी जी को 2 हजार रूपयों की थैली भेंट की गई। सभा की समाप्ति के बाद लोग उस चबूतरे के ईट–पत्थर और यहां तक की मिट्टी भी अपने साथ ले गये जिस स्थान पर गांधी जी बैठे थे। उसी दिन संध्या बिलासपुर से वे रायपुर लौटे व 28 नवम्बर को ट्रेन से रवाना होकर गोंदिया होते हुये बालाघाट पहुंचे। यह उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश में अपने दूसरे प्रवास के दौरान गांधीजी ने रायपुर, धमतरी तथा बिलासपुर में विशेष रूप से महिलाओं की सभाओं को संबोधित किया। महिला उत्थान की दृष्टि से ये सभाएं महत्वपूर्ण कही जा सकती है। गांधी जी ने अपने उद्‌बोधन में महिलाओं को हरिजन फंड में दान देने के लिए ही प्रेरित नहीं किया, अपितु महिलाओं में सामाजिक जागरण का उत्साह भी पैदा किया। उनकी प्रेरणा से मध्यप्रदेश की महिलाएं समाज सुधार की दिशा में आगे बढ़ने लगी तथा राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लेने लगी।

इस प्रकार मध्यप्रदेश में महिला उत्थान के क्षेत्र में गांधी जी का मध्यप्रदेश आगमन महत्वपूण सिद्ध हुआ। गांधी जी जब 1920 में प्रथम बार मध्यप्रदेश आये तो उन्होंने महिलाओं की सभा को सम्बोधित कर उनमें राजनीतिक चेतना जागृत की। 1933 में अपनी द्वितीय मध्यप्रदेश यात्रा के दौरान उन्होंने महिलाओं को शिक्षा, समाज सुधार तथा अंधविश्वास निवारण का संदेश देकर उनका उत्साहवर्धन किया। मध्यप्रदेश में महिला उत्थान के लिए महात्मा गांधी का आगमन एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ। महिलाएं न केवल गांधी जी के नेतृत्व में आगे आई, अपितु उन पर गांधी दर्शन का प्रभाव भी परिलक्षित हुआ जो उनके उत्थान में मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

4.2 गांधी जी के विचारों का प्रभाव –

बीसवीं शताब्दी में पूर्वार्द्ध में कुछ समाज सेवी संस्थाओं के द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिये कार्य किये जा रहे थे। इस उद्‌देश्य से अनेक स्थानों में महिला संगठन स्थापित किये जा रहे थे। 1917 में रमाबाई रानाडे ने 'पूना सेवा सदन' की स्थापना। कर महिलाओं को शिक्षित करने का कार्यक्रम प्रारंभ किया। इस संस्था का उद्‌देश्य महिलाओ को गृह कार्यों की जिम्मेदारियों के लिए प्रवीण करन ` के साथ–साथ उन्हें सामाजिक और राजनैतिक दायित्यों को निभाने के लिए सक्षम बनाना था। सन् 1917 में ही ''द वुमेन इंडिया एशोसिएशन'' की बम्बई में स्थापना की गई। इस संस्था का एवं पूना सेवा सदन का उद्‌देश्य समान था। महिलाओं में आ रही जागृति के फलस्वरूप 19 27 में 'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' का

www.ignited.in

गठन किया गया जिसमें देश भर के 22 महिला संगठन सम्मिलित थे।

तथापि गांधीजी का भारत आगमन एवं उनका भारतीय राजनीति में प्रवेश भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर था। गांधी दर्शन में महिलाओं को समाज में पुरूषों के बराबर स्थान देने की वकालत की गई है तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन में आगे आने का मार्ग भी प्रशस्त किया गया है। गांधी जी असहयोग आंदोलन के दौरान देश में जहां कही भी गये, उन्होंने अपने विचारों एवं जादुई व्यक्तित्व से महिलाओं को प्रभावित किया। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में स्थापित विभिन्न महिला संगठनों का कार्यक्षेत्र एवं प्रभाव सीमित था, परंतु गांधी जी ने समाज की उच्च वर्ग की महिलाओं से लेकर वनांचलों में निवास करने वाली आदिवासी महिलाओं तक उत्साह का संचार करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। उनका मध्यप्रदेश आगमन तथा महिलाओं की सभाओं में दिये गये भाषण इस क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण के लिए प्रेरक तत्व बन गये।

गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा आयोजित 1919 के सत्याग्रह आन्दोलन से स्त्रियों को भारतीय राजनीति में आने का अवसर प्राप्त हुआ। गांधी जी के लिए राष्ट्रीय आंदोलन केवल एक राजनीतिक संघर्ष नहीं था वरन समाज को पुनर्जीवित करने का तथा पुनर्जागरण का माध्यम था। उन्होंने राष्ट्रीय गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका विश्वास था, कि महिलाओं का स्वभाव मुख्यतः अहिंसक सत्याग्रह के अनुकूल होता है, जिसके लिये शारीरिक शक्ति की नहीं बल्कि नैतिक साहस व आध्यात्मिक इच्छा शक्ति की आवश्यकता होती है। 1919 के सत्याग्रह आन्दोलन के पूर्व गांधी जी ने स्त्रियों को राजनीति में आने के लिये प्रोत्साहित किया, जिसके फलस्वरूप सीमित संख्या में महिलाओं ने इस आंदोलन में भाग लिया। श्रीमती एनीबेसेन्ट तथा सरोजनी नायडू ने बंबई में महिलाओं की सभा में उन्हें सत्याग्रह में सम्मिलित होने का प्रशिक्षण दिया तो पंजाब की सरला देवी चौधरानी ने महिलाओं को राजनीतिक आधार पर संगठित किया। लाहौर में महिलाओं ने बड़ी संख्या में सार्वजनिक सभाओं में भाग लेकर अपनी राजनीतिक जागरूकता का परिचय दिया।

जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है असहयोग आंदोलन के दौरान 20 दिसम्बर 1920 को पं. सुंदरलाल शर्मा के साथ महात्मा गांधी अपनी प्रथम मध्यप्रदेश यात्रा पर रायपुर आये। रायपुर से वे धमतरी एवं कुरूद गये। धमतरी से लौटने के बाद उन्होंने रायपुर में महिलाओं की सभा को सम्बोधित किया। यह सभा आनंद समाज लाईब्रेरी के प्रांगण में हुई। इस सभा में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। गांधी जी ने यहां महिलाओं से तिलक स्वराज्य कोष के लिये अपील की जिसका वहां पर उपस्थित महिलाओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा और उपस्थित महिलाओं के पास जो कुछ भी था उसे गांधी जी के चरणों में अर्पित करने की होड़ लग गई। अनुमानतः दो हजार रूपये मूल्य के सोने–चांदी के आभूषण और रूपये एकत्रित हो गये। उसी समय से इस क्षेत्र में महिलाओं में विशेष जागृति परिलक्षित हुई। तथा उसी स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने सक्रिय भाग लिया। महिलाओं को उत्साहित एवं संगठित कर एक लक्ष्य महात्मा गांधी ने प्रदान किया।

1920 में उन्होंने असहयोग आंदोलन चलाया जिससे महिलाओं को एक नई दिशा मिली। 1930 में गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भी महिलाओं ने तन–मन–धन से पूर्ण सहयोग दिया। तथा अनेक यातनाओं को सहते हुए उस समय राजनीतिक आंदोलन की बागडोर संभाली जब हजारों राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिश सरकार ने कारावास में बंद कर रखा था। जिस समय सम्पूर्ण राष्ट्र स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रवाह में बह रहा था, मध्यप्रदेश उससे कैसे अछूता रहता? इस क्षेत्र की महिलाओं ने भी राजनैतिक आन्दोलन में अपना सक्रिय योगदान दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय इन महिलाओं ने खादी का प्रचार, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, मद्य निषेध, शराब की दुकानों पर धरना देना तथा पिकेटिंग करना आदि कार्यों में भाग लिया।

अपने धमतरी प्रवास के समय गांधी जी ने वहां के इमामबाड़े में महिलाओं की एक सभा को संबोधित किया था। इससे प्रभावित होकर धमतरी तहसील की महिलाओं ने संगठित होकर प्रभात फेरी के माध्यम से जन–जागृति का कार्य करना प्रारंभ किया। धमतरी नगर तथा समीपवर्ती गांवों की वृद्ध स्त्रियों ने जो अपनी बाल्यावस्था में सूत कातने का व्यवसाय करती थी, वे गांधी जी के चरखा चलाओ अभियान में सक्रिय भाग लेने लगी। वे अपना पोनी चरखा लेकर बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव के मकान में एकत्रित होती और सामूहिक रूप से सूत कातकर गांधी जी के ग्राम सूराज के स्वप्न को साकार करती। मध्यम वर्ग की स्त्रियां जो अपने गृह कार्य को संपन्न करने के बाद शेष समय में निष्क्रिय रहा करती थी, उन सबने सूत कातने का कार्य न केवल देश हित के लिए करना प्रारंभ किया वरन् इसके द्वारा उन्हें अर्थ उपार्जन करने में भी सफलता प्राप्त हुई। इस प्रकार गांधी जी के प्रभाव से महिलाएं आर्थिक स्वालम्बन की ओर अग्रसर होने लगी। धमतरी के अतिरिक्त मध्यप्रदेश के अन्य स्थानों में भी महिलाआं ने बड़ी संख्या में चरखा कातकर महिला सशक्तिकरण की नींव रखी।

गांधी जी ने महिलाओं को सत्याग्रह के लिए सक्षम निरूपित किया था। अतः उनके द्वारा संचालित सविनय अवज्ञा आंदोलन में मध्यप्रदेश की महिलाओं ने सत्याग्रह का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान रायपुर नगर में विदेशी वस्त्रों की दुकानों के समक्ष धरना देने के लिये अनेक महिलाएं आगे बढ़ीं। रायपुर की एक प्रखर गांधीवादी महिला डॉ. राधाबाई ने सत्याग्रही महिलाओं का एक समूह तैयार किया जिसमें केतकी बाई, श्रीमती फूलकुंवर बाई, श्रीमती रोहणी बाई परगनिहा तथा श्रीमती जमुना बाई सम्मिलित थी। रायपुर के महंत लक्ष्मीनारायण दास का पुरानी बस्ती स्थित जैतूसाव मठ सत्याग्रह का बड़ा प्रेरणा स्थल था, जहां एकादशी महात्म्य सुनने आने वाली सत्याग्रह का प्रशिक्षण प्राप्त करती थीं। महंत लक्ष्मीनारायण दास की वृद्ध मां पार्वती बाई सत्याग्रही महिलाओं को आशीर्वाद देकर पिकेटिंक के लिए भेजती थी। इन महिलाओं का नेतृत्व करती थीं श्रीमती अंजनी बाई, रजनी बाई, फुलकुंवर श्रीवास्तव तथा जानकी बाई। सत्याग्रह का दूसरा केन्द्र बूढ़ापारा स्थित वामनराव लाखे का बाड़ा था और इसकी नेत्री थी पं. रविशंकर शुक्ल की पत्नी भवानी बाई शुक्ल। सत्याग्रह का तीसरा स्थान कमासीपारा स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर था जिसकी नेत्री रूखमणी बाई तिवारी थी। चौथा स्थान तात्यापारा स्थित डॉ. राधा बाई का मकान जिसका नेतृत्व श्रीमती राधाबाई, पार्वती बाई, गंगाबाई और यशोदा बाई परगनिहा करती थी। इस प्रकार रायपुर नगर की महिलाएं हर मोहल्ले में बैठकें लेकर जन–जागरण का कार्य करती थी। वे प्रभात फेरियों के माध्यम से तथा विदेशी वस्त्रों की दुकानों के समक्ष धरना देकर सत्याग्रह में भाग लेती थीं यह उल्लेखनीय है कि रायपुर में कीका भाई की दुकान के समक्ष धरना देते हुए 83 वर्षीय वृद्ध केतकी बाई ने अपनी गिफ्तारी दी।

इस प्रकार गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर मध्यप्रदेश की महिलाओं ने स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेना प्रारंभ कर किया। असहयोग आन्दोलन के समय उन्होंने तिलक स्वराज फंड में दान देकर अपनी सक्रियता प्रदर्शित की। अनेक स्थानों में सामूहिक रूप से चरखा कातकर गांधी जी के ग्राम स्वराज की कल्पना को साकार किया तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सत्याग्रह के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। निःसंदेह महात्मा गांधी का मध्यप्रदेश प्रवास तथा उनके विचारों के प्रभाव से मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त होने लगा।

4.3 गांधी वादी नेताओं का योगदान –

मध्यप्रदेश का समाज मूलतः भाग्यवादी था। इस क्षेत्र में अंधविश्वास, अज्ञानता, तथा अकर्मण्यता आदि कुछ दोषों के रहते हुए भी अन्य विशेष गुण विद्यमान थे, जैसे सरलता, धर्मिकता तथा ईमानदारी। इन गुणों के आधार पर ही यह आशा थी कि यदि इस क्षेत्र की उन्नति के लिए प्रयत्न किए जाए तो शीघ्रातिशीघ्र सुधार किया जा सकता था। यहां का समाज विभिन्न मतावलंबियों, समाज– सुधारको तथा संतो के विचारों एवं कार्यो से प्रभावित रहा। कबीर के शिष्य धर्मदास के प्रयास से यहां कबीर पंथ का उद्‌भव एवं विकास हुआ। संत गुरू घासीदास की शिक्षाओं के कारण समाज के निम्न समझें जाने वाले समुदाय में जागृति आई। ब्रिटिश शासनकाल में नई प्रशासनिक व्यवस्था, शिक्षा का विकास, पश्चिमी विचारों का प्रभाव तथा यातायात की सुविधा के फलस्वरूप मध्यप्रदेश के सामाजिक जीवन में सुधार के लिए वातावरण निर्मित होने लगा। राजा राममोहन राय के ब्रम्हसमाज, दयानंद सरस्वती के आर्य समाज तथा महादेव गोविन्द रानाडे के प्रार्थना समाज का प्रभाव इस क्षेत्र तक फैलने लगा। भारत के राष्ट्रीय जागरण से भी मध्यप्रदेश अछुता नही रहा। कांग्रेस के संपर्क में आकर मध्यप्रदेश के अनेक नेताओं ने न केवल राष्ट्रवाद की भावना यहां फैलाई, अपितु समाज सुधार के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया। मध्यप्रदेश में समाज सुधार के लिए कार्य करने वाले नेताओं में पं. सुन्दरलाल शर्मा, वामनराव लाखे, डॉ. ई. राघवेन्द्र राव, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, माधवराव सप्रे, तथा धनश्याम सिंह गुप्त आदि थे। इन नेताओं का नाम मध्यप्रदेश के राजनीतिक विकास में भी अग्रणी हैं। स्वतंत्रता संग्राम के साथ इन नेताओं ने समाज के उत्थान एवं महिलाओं की दशा में सुधार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। इन नेताओं का यह मत था कि समाज सुधार के बिना लोंगों में राजनीतिक चेतना जागृत नहीं की जा सकती। अतः राजनीति जागृति के साथ– साथ समाज सुधार का भी प्रयास किया गया जिससे यह क्षेत्र राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ सके।

समाज सुधार के लिए कार्य करने वाले नेताओं ने सर्वप्रथम सामाजिक समानता की स्थापना के लिए समाज से अस्पृश्यता की भावना को दूर करने का कार्य प्रारंभ किया। समाज में अस्पृश्य एवं निम्न समझी जाने वाली जातियों के उद्वार का कार्य मध्यप्रदेश में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने प्रारंभ किया। उन्होने इसे महात्मा गांधी के अछूतोद्वार कार्यक्रम से पहले ही प्रारंभ कर दिया था। इससे अस्पृश्यों को समाज में समानता के साथ जीने का सामाजिक अधिकार प्राप्त हुआ। केवल शहरी क्षेत्रों में ही नही अपितु ग्रामीण क्षेत्रों में भी हरिजनों के मन से हीन–भावना को दूर करने के लिए उन्हे जनेऊ धारण करने का कार्यक्रम अपनाया गया जो पहले केवल द्विज वर्ग के लोग ही धारण करते थे। इसके अतिरिक्त समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों और बुराईयो को दूर करने का प्रयास किया गया। इसमें नारायणराव मेघावाले तथा घनश्याम सिंह गुप्त ने उनका साथ दिया। सतनामियों के मन से हीन भावना को दूर करने के लिए उनके द्वारा दिया गया भोजन ग्रहण करना तथा उनके घरों में सत्यनारायण की कथा करना आदि कार्य किये गये। ब्राम्हणों द्वारा हरिजनों के घरों में कथा करने से इंकार किया जाता था। अतः पं. सुन्दरलाल शर्मा ने हरिजनों के यहां कथा–वाचन तथा पूजा–पाठ प्रारंभ किया। यह कार्य यहां 1919 ई. में प्रारंभ किया गया।23 इन सभी से प्रभावित होकर सतनामी समाज के धर्मगुरूओं ने भी व्यापक स्तर पर समाज सुधार का कार्य प्रारंभ किया, जिनमें अगमदास और राजमहंत नैनदास ने प्रमुखता से भाग लिया। जनेऊ धारण करने के पश्चात् सतनामी लोग उसकी पवित्रता को समझने लगे और उसी के अनुरूप चरित्र निर्माण में संलग्न हुए।

वस्तुतः अछूतों व हरिजनों की दयनीय स्थिति का लाभ उठाकर ईसाई मिशनरियां उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित कर रही थी। इन लोगों को सामाजिक समानता का अधिकार देकर तथा धन देकर इनका धर्म परिवर्तन कर लिया जाता था। मिशनरियों का प्रमुख कार्य था कि जहां कहीं आदिवासी तथा हरिजन बहुसंख्यक हो वहां पहुंचकर उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करना। इन्हें धर्म–परिवर्तन करने से रोकने के लिए यह आवश्यक था कि हरिजनों को हिन्दू समाज में बराबरी का दर्जा देने के लिए सक्रिय कदम उठाया जाए और उन्हें भी सवर्णों की भांति सामाजिक और धार्मिक अधिकार प्रदान किए जाये।

पं. सुंदरलाल शर्मा के समान वामनराव लाखे ने भी समाज सेवा का संकल्प लिया। तथा रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वास को दूर करने की कोशिश की। उन्होंने सगोत्र विवाह करने का मार्ग प्रशस्त किया। अपने चतुर्थ पुत्र नारायण वामन लाखे का सगोत्र विवाह कर उन्होंने उदाहरण प्रस्तुत किया।

निःसंदेह इन नेताओं द्वारा सामाजिक असमानता, छुआछूत, जॉति–पॉति की भावना को दूर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया। इनका विश्वास था कि ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए सभी वर्ग एवं समुदाय के लोगों द्वारा सम्मिलित रूप से कार्य किया जाना चाहिए। इसके लिये लोगों का जागृत होना आवश्यक था। यह उनके सम्मिलित प्रयासों का ही परिणाम था कि सभी वर्ग तथा जाति के लोगों ने स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया। इसी प्रकार बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रारंभ किए गए समाचार पत्रों जैसे–मध्यप्रदेश मित्र आदि ने भी जन–जागृति में अहम् भूमिका अदा की।

महिलाओं की स्थिति को समाज में बेहतर बनाने के लिए तथा उन्हें जागृत करने के लिए उनका शिक्षित होना आवश्यक था। समाज में अछूत समझी जाने वाली जाति की बालिकाओं की शिक्षा के लिए हरिजन कन्या पाठशाला की स्थापना पं. सुंदरलाल शर्मा की प्रेरणा से की गई। उनका मत था कि समाज–सुधार तथा सामाजिक समानता के लिए महिलाओं को जागरूक होना चाहिये, क्योंकि समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं अंधविश्वास को शिक्षा के अभाव में वे अपनाये हुए थी। इसलिए उन्होंने हरिजन बालिकाओं के लिए पाठशाला की स्थापना पर जोर दिया। हरिजन बालकों के लिए तो कुछ विद्यालय प्रारंभ किए गए थे, परन्तु बालिकाओं के लिए कोई पाठशाला नहीं थी। अतः उन्होंने इसके लिए प्रयास किया। वे बालिकाओं की शिक्षा को भी बालकों की शिक्षा के समान आवश्यक मानते थे। इससे स्पष्ट है कि वे महिला शिक्षा और महिला उत्थान के महत्व को

समझते थे। इसी प्रकार बाल विवाह तथा दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए बने कानून में जो संशोधन किए गए उसमें उन्होंने अपना समर्थन दिया। विवाह आदि में दिए जाने वाले दहेज तथा फिजूलखर्ची को बंद करवाकर वे लोगों को आर्थिक रूप से असहाय होने से बचाना चाहते थे। बाल विवाह को रोककर वे महिलाओं को कम उम्र में विधवा होने से बचाना चाहते थे। मध्यप्रदेश के समाज में उन दिनों बिना ब्लाउज के साड़ी पहनने का रिवाज था। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी को पहली बार ब्लाउज पहनाया। यद्यपि इसके लिए उन्हें ब्राम्हण समाज से बहिष्कृत किये जाने का प्रयास किया गया, परन्तु उस समय के नवयुवक उनके साथ थे अतः उन्हें बहिष्कृत नहीं किया जा सका।

हरिजनोद्धार एवं महिला शिक्षा की दिशा में पं. सुंदरलाल शर्मा द्वारा किये गये प्रयास सराहनीय कहे जा सकते हैं। गांधी जी के हरिजनोद्धार कार्यक्रम के पूर्व उन्होंने मध्यप्रदेश में अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए सतनामियों को जनेऊ पहनाकर उन्हें सामाजिक समानता प्रदान करने में जो भूमिका निभाई, इसके लिए स्वयं गांधीजी ने उन्हें अपना गुरू और पथप्रदर्शक माना था। हरिजन बालिकाओं के लिए पाठशाला प्रारंभ कर उन्होंने महिला जागृति के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इतना ही नहीं अपनी पत्नी को ब्लाउज पहनाकर उन्होंने महिला उत्थान का उदाहरण प्रस्तुत किया। महिला उत्थान के लिए किये गये उनके कार्य निश्चित ही अनुकरणीय सिद्ध हुए।

मध्यप्रदेश में महिला उत्थान की दिशा में पं. वामनराव लाखे का योगदान भी विशेष उल्लेखनीय है। उनकी अध्यक्षता में 1934 में रायपुर में विधवा आश्रम की स्थापना की गई। इसी प्रकार उन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए भी विशेष रूप से कार्य किया। रायपुर में महाराष्ट्रीयन बालिकाओं के लिए स्थापित एक कन्या पाठशाला को आरंभ में आर्थिक परेशानी होने पर दो वर्ष तक लाखे जी ने 1500 रूपये की सहायता प्रदान की जो स्त्री–शिक्षा के प्रति उनके महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है। उनका यह स्पष्ट मत था कि स्त्रियों को केवल पारिवारिक दायित्वों में बंधे न रहकर राजनीतिक, सार्वजनिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में स्वःस्फूर्त रूप से दायित्व वहन करने हेतु आगे आना चाहिए। स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न अवसरों पर उनका यह प्रयास रहा कि राजनीतिक गतिविधियों में अधिक से अधिक स्त्रियों को सम्मिलित किया जाए। इसे वे महिलाओं में जागरण लाने तथा समाज में प्रचलित विभिन्न बुराईयों को दूर करने का प्रभावकारी माध्यम मानते थे। भारतीय समाज में महिलाओं के सम्बन्ध में प्रचलित हीन भावनाओं के वे कट्टर विरोधी थे। बाल विवाह को वे महिलाओं की दुरावस्था का एक प्रमुख कारण मानते थे। दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा जैसे सामाजिक बुराईयों के वे सख्त विरोधी थे। परिवार एवं समाज में महिलाओं की समानता का अधिकार प्रदान किये जाने के वे पक्षधर थे। वे चाहते थे कि हर योग्य महिला पारिवारिक दायित्वों से समय निकालकर राष्ट्रीय तथा समाज कल्याण संबंधी कार्यक्रमों में सहयोग दें।

असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन आदि में उनकी पत्नी श्रीमती जानकी बाई लाखे ने अन्य महिलाओं श्रीमती शुक्ल (पं. रविशंकर शुक्ल की धर्मपत्नी), डॉ. राधाबाई आदि के साथ मिलकर अग्रणी भूमिका अदा की। वनिता मंडलों, विधवा आश्रमों आदि नारी कल्याण संबन्धी अनेक संस्थाओं के साथ भी उनका गहरा संबंध रहा। इनको सफल बनाने की दिशा में बराबर प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग देते रहे। समाज में व्याप्त निर्धनता को दूर करने के लिए उन्होंने सभी महिलाओं से सहयोग की अपील की। महिला शिक्षा के लिए उनके प्रयासों द्वारा रायपुर में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जानकी देवी के नाम पर जानकी देवी महिला पाठशाला की स्थापना हुई।

पं. वामनराव लाखे ने महिला उत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने महिलाओं को जागृत करके न केवल राजनीतिक क्षेत्र अर्थात राष्ट्रीय आन्दोलन में आगे आने की प्रेरणा दी, अपितु उस समय पड़ रहे अकालों के कारण लोगों की आर्थिक स्थिति खराब थी उसे सुधारने के लिए उन्होंने महिलाओं से भी सहयोग प्रदान करने को कहा। उनके प्रयासों से महिलाएं घर की चारदीवारी से बाहर आई तथा राजनीतिक एवं आर्थिक कार्यों में पुरूषों को सहयोग प्रदान करने लगी। यह महिला उत्थान के क्षेत्र में किया गया एक बड़ा प्रयास था।

मध्यप्रदेश के एक अन्य समाज सुधारक पं. माधवराव सप्रे थे, जिन्होने महिलाओं के उत्थान में सक्रिय भूमिका निभाई। वे सामाजिक सुधार के पक्षधर थे। वे विधवा विवाह के समर्थक तथा छूआछूत के विरोधी थे। वे स्त्री–शिक्षा के महत्व को भली–भांति समझते थे। अतः उन्होने कन्याओं को पाठशालाओं में भेजा तथा घर पर भी उनकी उचित शिक्षा की व्यवस्था की। उनका मत था कि महिलाएं उचित शिक्षा प्राप्त करने पर अपने उत्तरदायित्वों का सही तरीके से निर्वहन कर सकेंगी और समाज सुधार के लिए उनका जागृत होना आवश्यक था और उनमें जागृति शिक्षा के माध्यम से ही आ सकती थी। उन्होने अपने साथियों के सहयोग से रायपुर में जानकी देवी कन्या पाठशाला की स्थापना की।

स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के प्रभाव से मध्यप्रदेश अछूता नहीं रहा। आर्य समाज ने महिला उत्थान की दिशा में सराहनीय प्रयास किया। महिलाओं को सामाजिक समानता दिलाना, बाल–विवाह का विरोध, विधवा विवाह को प्रोत्साहन तथा महिला शिक्षा की दिशा में इसका योगदान उल्लेखनीय है। आर्य समाज से सम्बद्ध दुर्ग के घनश्यामसिंह गुप्त का महिला उत्थान की दिशा में किया गया प्रयास महत्वपूर्ण है। उनके प्रयासों से जुलाई 1948 में तुलाराम परगनिहा के नाम पर तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय दुर्ग में आरंभ हुआ जो स्वामी दयानंद सरस्वती के संदेश को घर–घर पहुॅचाने, महिला को समाज में सम्मानित स्थान दिलाने उनकी सामाजिक गरिमा बढ़ाने तथा महिला शिक्षा के प्रचार–प्रसार में लगा हुआ है। प्रारंभ में प्राथमिक विद्यालय के रूप में खोला गया यह विद्यालय 1958 में पूर्व माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में उन्नत हुआ। इस विद्यालय की प्रगति का अलगा सोपान घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय है। दुर्ग में कन्याओं की शिक्षा के लिए अलग से कोई महाविद्यालय नही था। अतः दयानंद शिक्षण समिति ने महाविद्यालय प्रारंभ करने का निश्चय किया एवं 1978 में इस महाविद्यालय की स्थापना हुई। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि घन श्याम सिंह गुप्त आर्य समाज के राष्ट्रीय स्तर के नेता थे अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए उन्होने आर्य समाज को मध्यप्रदेश में लोकप्रिय बनाया। अतः उनकी सेवाओं को चिरस्मरणीय बनाये रखने के दृष्टि से इस महाविद्यालय का नाम उनके नाम पर रखा गया है। घनश्याम सिंह गुप्त 1937 से 1945 तक मध्यप्रांत विधानसभा के स्पीकर भी थे। उनके प्रयासों से मध्यप्रांत विधानसभा ने 20 मार्च 1937 को आर्य विवाह बिल सर्वसम्मति से पारित किया गया था, जिसके अनुसार लड़कियों के विवाह की आयु बढ़ाई गई तथा अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार उन्होने महिला उत्थान की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता हैकि स्वाधीनता आंदोलन के साथ–साथ मध्यप्रदेश के नेताओं ने महिला उत्थान की दिशा में अपना योगदान दिया। उनके प्रयत्नों से महिलाओं में शिक्षा के विकास के साथ–साथ जागृति आती गई तथा घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर उन्होने राजनीतिक, सामाजिक तथा सार्वजनिक गतिविधियों में भाग लेना प्रारंभ किया। ब्रिटिश सरकार ने भी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए अनेक कानून बनाए परिणामस्वरूप धीरे–धीरे समाज में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आना प्रारंभ हुआ जो राष्ट्रीय आन्दोलन के समय व्यापक रूप से दिखाई पड़ा।

महिला उत्थान की दिशा में पं. सुंदरलाल शर्मा, पं. वामनराव लाखे, पं. माधवराव सप्रे तथा घनश्यामसिंह गुप्त ,द्वारा मध्यप्रदेश में किये गये कार्यों से यह मत व्यक्त किया जा सकता है कि स्वाधीनता आंदोलन के साथ– साथ पूरे देश में ही नहीं, अपितु मध्यप्रदेश में भी महिला उत्थान के लिए उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे थे। विशेषकर महिलाओं को शिक्षित करने के लिए पाठशालाओं की स्थापाना इन नेताओं ने की थी तथा महिलाओं को जागृत करने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप मध्यप्रदेश में महिला उत्थान का मार्ग प्रशस्त होने लगा।

4.4 सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण –

मध्यप्रदेश का सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश प्रारंभ से ही अति विशिष्ट रहा है। सामाजिक जीवन में जहॉ एक ओर सामाजिक समरसता दृष्टिगोचर होती है, तो दूसरी ओर लोगों की आर्थिक आवश्यकताएं भी न्यूनतम रही। समाज में जातिभेद के बावजूद जातीय तथा धार्मिक संर्कीणता नही थी। इसी प्रकार आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि एवं वनों पर आधारित रहा है। मध्यप्रदेश का सामाजिक इतिहास अत्यन्त प्राचीन है, जो कई संस्कृतियों के समन्वय का प्रतिरूप है। मध्यप्रदेश की भौगोलिक सीमा और सांस्कृतिक परिधि ने यहाँ निवासियों को एक सूत्र में बांध कर रखा है।34 अनेक वर्षो की राजनीतिक उथल–पुथल तथा ऐतिहासिक और राजनीतिक परिवर्तनों के बाद भी मध्यप्रदेश अपनी अनेक प्राचीन परम्पराओं को कम से कम जीवित रख सका। इसका कारण यही था कि, जिन राजवंशों ने यहां शासन किया, उन्होंने कोई विदेशी या विजातीय प्रथा यहां पर नहीं लादी। वे स्वयं इसी भूमि के होकर रहे। आर्यों एवं अनार्यों की शासन व्यवस्था ही यहां प्रचलित रही, जिनके अवशेष अभी तक यहॉ दिखाई पड़ते है। यह प्रांतआर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम स्थल है। इनकी गहरी जड़े ब्रिटिश शासन काल की पराधीनता में ही उन्मूलित नही की जा सकी। आर्य अनार्य परम्पराओं का जो समन्वयात्मक संगठन यहॉ होता रहा, उसे विश्रृंखलित करने का प्रयास कभी किसी ने नही किया। यहाँ की जनजातियों का सामाजिक जीवन स्वतः अपने आप में पूर्ण रहा। भौगोलिक कारणों से आरण्यक जातियों का इस क्षेत्र में बहूल्य रहा। यहॉं की आरण्य जातियॉ सीदी–सादी, निष्कपट और अकृत्रिम जीवन पद्धति को लेकर चलने वाली थी। इनकी सभ्यता उत्तर और दक्षिण की संस्कारशील, शिष्ट और मर्यादित सभ्यता से अलग थी।लोकजीवन के सहज, स्वाभाविक और आडम्बरहीन कार्यकलापों का यहां की स्थानीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव था।

1854 ई. में ब्रिटिश सत्ता स्थापना का प्रभाव यहॉ की समाजिक स्थिति पर पड़ा। ब्रिटिश नियन्त्रण से इस क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया, जिसने यहाँ के समाज को व्यापक रूप से प्रभावित किया। इस समय मध्यप्रदेश के समाज में अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, अस्पृश्यता, इत्यादि कुरीतियॉ व्याप्त थी। जाति व्यवस्था जटिल तथा एक निश्चित क्षेत्र विशेष तक सीमित हो गई थी लोग अपने क्षेत्र से बाहर के लोगों को अपनी जाति का नही मानते थे तथा उनसे कोई संबन्ध नही रखते थे उनसे वैवाहिक संबन्ध आदि स्थापित करने पर उन्हे समाज जाति से बहिष्कार या ग्राम बहिष्कार की सजा दी जाती थी समाज में कबीर पंथ का प्रभाव समाप्त हो रहाथा तथा पुनः आडम्बर, अंधविश्वास और कुरीतियॉ व्याप्त हो गई थी। कुछ आदिवासी क्षेत्रों में नर–बलि की प्रथा प्रचलित थी। सतनाम पंथ के प्रर्वतक गुरू घासीदास के द्वारा इसे रोकने का प्रयास किया गया किन्तु वे इसे पूर्ण रूप से बंद नही करा पाये।

ब्रिटिश शासन काल में महिलाओं में शिक्षा के प्रचार –प्रसार के लिए अनेक स्कूल खोले गए परन्तु इसका लाभ प्रारंभ में केवल उच्च वर्ग की महिलाओं को मिला तथा बाद में यह उच्च मध्यम वर्ग तक ही सीमित रहा। शिक्षा निम्नवर्ग की महिलाओं की पहुंच से दूर थी। इसके अतिरिक्त इस काल में गठित अनेक समाज सुधार संस्थाओं के द्वारा समाज सुधार के साथ–साथ महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए कार्य किए गए। ब्रिटिश सरकार ने भी समाज में व्याप्त कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए अनेक कानून बनाये जिनमें सती प्रथा निषेध अधिनियम, बाल–विवाह निषेध अधिनियम, विधवा–पुनर्विवाह अधिनियम आदि प्रमुख थे। इन सबके फलस्वरूप मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण का प्रादुभाव हुआ। ब्रिटिश शासनकाल में नई प्रशासनिक व्यवस्था, पश्चिमी शिक्षा का विकास, आधुनिक यातायात के साधनों का विकास आदि से मध्यप्रदेश के लोंगो का बाहरी क्षेत्रों से सम्पर्क स्थापित होने लगा। इस सम्पर्क से यहां सामाजिक परिवर्तन परिलक्षित होने लगे समाज में महिलाओं की स्थिति में भी सुधार दिखाई देने लगा। 1920 में गांधी जी के संम्पर्क में आने के पश्चात् तथा उनके नेतृत्व में चले राष्ट्रीय आन्दोलनों के फलस्वरूप मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण मूर्त रूप लेने लगा। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण की दिशा में आधुनिक काल में हुए सामाजिक परिवर्तनों की प्रमुख भूमिका रही।

सामाजिक क्षेत्र के समान ही आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं का सशक्तिकरण हो रहा था। मध्यप्रदेश की महिलाएँ आर्थिक क्षेत्र में किसी न किसी रूप में अपना योगदान देती रही है। वे पुरूषों को कृषि कार्यो में सहायता देती रही है। इसके अलावा वे घर में कपड़ा बुनना, मिट्टी के बर्तन बनाना, बांस की वस्तुएँ जैसे टोकरियॉ आदि बनाना तथा अन्न कूटना–पीसना आदि कार्य भी करती है। अतीत से ही मध्यप्रदेश आर्थिक दृष्टि से एक समृद्ध क्षेत्र रहा है। एक ओर महानदी के रेत में स्वर्ण प्राप्ति की जानकारी मिलती है तो दूसरी ओर बिलासपुर जिले से प्राप्त रोमन सिक्कों के आधार पर विदेशी व्यापार की जानकारी मिलती है। इस अंचल में दो प्रकार के जन–जीवन का उल्लेख मिलता है। नगरीय सभ्यता से संबंधित जन–जीवन एवं ग्रामीण सभ्यता से संबंधित संस्कृति। दोनों के समन्वय पर ही आर्थिक समृद्धि एवं विकास आधारित होता है। यहॉ के लागों का जन–जीवन सादगी से परिपूर्ण था जो रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा में भी दिखाई पड़ता है। दक्षिण कोसल अर्थात मध्यप्रदेश की भूमि अतीत से ही उर्वरा रही है। अतः मध्यप्रदेश में कृषि को ही जीविका का सर्वश्रेष्ठ साधन माना गया है। नदियॉ, पर्वत, श्रृखलाएँ, विभिन्न प्रकार के खनिजों तथा वनों की दृष्टि

से दक्षिण कोशल प्राचीन काल से ही अत्यंत समृद्ध रहा है। भारतीय जीवन में जहॉ एक ओर धर्म की प्रमुखता है वहीं दूसरी ओर अर्थ के महत्व को नकारा नही जा सकता। यद्यपि ऋषि–मुनियों ने अर्थ को सदा तुच्छ समझा तथापि राज्य एवं सामान्य जनता के जीवन और विकास के लिए अर्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है।

मराठा कालीन राजस्व व्यवस्था का मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। सूबा शासन काल में राजस्व व्यवस्था में वृद्धि के कारण कृषि कार्यो के अतिरिक्त लोग मजदूरी करने लगे जिसमें महिलाओं की संख्या अधिक थी। निर्धनता के कारण महिलाएं प्रायः खेतों में मजदूरी तथा अन्य प्रकार के कार्य करने लगी इस प्रकार आर्थिक मजबूरी धीरे– धीरे महिलाओं के परिवार में आर्थिक उत्पादन में सक्रिय भूमिका के रूप में परिवर्तित होती गई।

रेशम उद्योग मध्यप्रदेश में पहले भी महत्वपूर्ण था और अभी भी है। रेशम बुनाई के मुख्य केन्द्र बिलासपुर, छुरी, अकलतरा, चांपा और बलौदा है। इसके अतिरिक्त सूती वस्त्रों का निर्माण भी इस क्षेत्र में होता है। डिस्ट्रिक्ट गजेटियर से ज्ञात होता है कि बुनाई के प्रमुख केन्द्र सारागांव,खरोरा,धनोरा,राजिम,बलौदा और सिमगा आदि थे। रायपुर जिले में रेशमी कपड़ों की अपेक्षा सूती कपड़े अधिक बुने जाते थे। वस्त्र उद्योग के अंतर्गत बुनाई का कार्य पुरूष ही नही करते थे बल्कि महिलाएं भी इस कार्य मे दक्ष होती थीं। ब्रिटिश काल में अंग्रेजो की नीतियों के कारण यहॉ का वस्त्र उद्योग पूर्ण रूप से नष्ट हो चुका था। बीसवीं शताब्दी के पूवार्द्ध में महात्मा– गांधी के आह्वान पर लोगों ने खादी को अपनाना शुरू किया तथा चरखा लेकर सूत कातना तथा कपड़ा बूनना प्रारंभ किया और इस कार्य में महिलायें अग्रणी रही। उन्होने न केवल खादी वस्त्र बुनना प्रारंभ किया बल्कि अपने परिवार के सदस्यों को खादी वस्त्रों के प्रयोग करने पर बल दिया। उन्होने अपने क्षेत्र में खादी के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका यह महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में उठाया गया बड़ा कदम था।

ब्रिटिशकालीन भू–राजस्व व्यवस्था का भी महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव पड़ा। कृषि एवं ग्रामोद्योग के प्राकृतिक संतुलन के नष्ट हो जाने के फलस्वरूप महिलाएं जो कृषि कार्यो में सहयोग कर तथा अर्थ–उपार्जन के द्वारा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में जो योगदान वह प्रदान करती थी उससे वह वंचित हो गई क्यों कि भू–राजस्व इतनी अधिक मात्रा में वसूला जाता था, कि कृषि से प्राप्त उपज के अतिक्ति अन्य स्त्रोतों से प्राप्त आय भी लगान अदा करने में समाप्त हो जाती थी इससे ग्रामीण ढ़ाचा बिखरा और शहरीकरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला। जब लोग शहरों में आकर बसने लगे तब वहॉं के सामाजिक वातावरण का प्रभाव उन पर पड़ा। इससे महिलाओं में जागृति आई। समाज सुधारकों के द्वारा महिला उत्थान की दिशा में जो कार्य किये जा रहे थे उनका प्रभाव भी इन पर पड़ा।

ब्रिटिश सरकार की भू–राजस्व व्यवस्था से कृषि का पतन तथा शिल्प उद्योगों का विनास होने लगा। इसके परिणाम स्वरूप भारत में अनेक स्थानों पर समय –समय पर अकाल पड़ने लगे। मध्यप्रदेश भी इन अकालों से अछूता नही रहा अकाल के कारण महिलाओं को अर्थ–उर्पाजन के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा। अकाल के समय मध्यप्रदेश की महिलाएं अनेक प्रकार के हस्तशिल्पों द्वारा धन अर्जित कर अपने परिवार का पालन पोषण करती थी। कहना न होगा कि अकालों के दुष्परिणामों के साथ–साथ कुछ अच्छे परिणाम भी रहे।44 यह कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश की महिलाएं कृषि कार्यो को प्रारंभ से ही करती आ रही थी परन्तु अकालों की भयावहता तथा भू–राजस्व में निरन्तर वृद्धि होने के कारण उन्हे अन्य कार्य– सड़क फूटना मिट्टी तोड़ना आदि कार्य भी करने पड़े। इससे उन्हे आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने में सहायता मिली। ब्रिटिश सरकार की हस्तशिल्प उद्योगों को समाप्त करने की नीति के बावजूद भी मध्यप्रदेश में सूती और रेशमी (कोसा) वस्त्रों का उत्पादन आज भी परंम्परागत रूप से होता है। जिसमें महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। इनके अतिरिक्त स्वाधीनता आंदोलन में गांधी जी के चरखा कार्यक्रम को अपनाकर महिलाओं ने स्वावलंबन प्राप्त करने का प्रयास किया। इन सबके फलस्वरूप छत्तीगढ़ में महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होती गई।

उपरोक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिए गांधी जी का महत्वपूर्ण योगदान था। गांधी जी की दो बार मध्यप्रदेश यात्रा से महिलाएं राजनीतिक रूप से जागृत होने लगीं। मध्यप्रदेश के अनेक गांधीवादी नेताओं के प्रयासों से सामाजिक सुधार किये जाने लगे तथा महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया। इतना ही नही ब्रिटिश शासनकाल में हो रहे समाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों का महिलाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इस प्रकार मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त होता गया।

संदर्भ

क्र.		
1.	ठा. भा. नायक(स.)	मध्यप्रदेश में गांधी, पृ.1
2.	सुधीर सक्सेना	ऐसे आये गांधी, पृ. 25.
3.	अरविंद शर्मा	मध्यप्रदेश का राजनीतिक इतिहास, पृ.–103
4.	सुधीर सक्सेना	पूर्वोद्धृत, पृ.40
5.	अरविंद शर्मा	पूर्वोद्धृत, पृ. 104
6.	सुधीर सक्सेना	पृ. 41–42
7.	सुरेश चन्द्र शुक्ला / अर्चना शुक्ला	मध्यप्रदेश का समग्र इतिहास पृ. 78
8.	सुधीर चन्द्र सक्सेना	पूर्वोद्धृत पृ.–31
9.	ठा. भा. नायक	पूर्वोद्धृत,पृ –2 में उद्धृत
10.	कर्मवीर खंडवा	2 दिसम्बर 1933, पृ–2
11.	उरोक्त	पृ. 3
12.	मध्यप्रदेश और गांधी जी	(गांधी शताब्दी समारोह समिति के लिए सूचना तथा संचालनालय द्वारा प्रकाशित) अक्टूबर 1969,पृ. 29
13.	अरविंद शर्मा	पूर्वोद्धृत पृ. 198

14.		मध्यप्रदेश संदेश, 25 सितंबर 1987 पृ –11
15.	मध्यप्रदेश और गांधी जी	पूर्वोद्धृत, पृ –31
16.	उपरोक्त,	पृ.32
17.	आशा रानी व्होरा	महिलायें और स्वराज्य पृ. 127
18.	राधा कुमार	स्त्री संघर्ष का इतिहास, पृ. 128
19.	विजय एग्न्यू	वुमैन इन इंडियन पालिटिक्स, पृ. 36
20.	सुधीर सक्सेना	पूर्वोद्धृत पृ. 31
21.	शोभाराम देवांगन	धमतरी तहसील में स्वतंत्रता आन्दोलन पृ.–41
22.	रेणुका झा	रायपुर जिले में स्वाधीनता आन्दोलन (अप्रकाशित शोध प्रबंन्ध), पृ–155
23.	ठा. भा. नायक	पूर्वोद्धृत पृ 4
24.	रमेन्द्रनाथ मिश्र एवं लक्ष्मीधर झा,	म्ध्यप्रदेश का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ 227
25.	संध्या तिवारी	म्ध्यप्रदेश में सामाजिक सांस्कृतिक संचेतना के संवाहक पं. सुन्दरलाल शर्मा (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध)
26.	बाबू मावली प्रसाद श्रीवास्तव	स्वर्गीय लाखे जी, नवज्योति, पृ 18
27.	वंदना देशमुख	बीसवीं शताब्दी में नारी मुक्ति (म्ध्यप्रदेश के विशेष सन्दर्भ में) (अप्रकाशित शोध प्रबंध), पृ. –93–94
28.	कमल किशोर पाण्डे	म्ध्यप्रदेश में समाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक उन्नयन के प्रेणता – श्री वामनराव लाखे, पृ. 74 (अप्रकाशित शोध प्रबंध)
29.	उपरोक्त	
30.	हरि ठाकुर	त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह की जीवनी पृ. 8
31.	आर्य सेवक,	(आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मासिक पत्र) फरवरी 1970, आर्य शिक्षण संस्था विशेषांक,पृ. 11
32.	उपरोक्त	मार्च –अप्रैल 1994 आर्य शिक्षण संस्था विशेषांक,पृ. 41